अक्खड— (**आ+स्कन्द्**) आक्रमण करना।

अक्खुंब— १ चखकर छोड़ना। २ नखों से कुरेदना (निचू २ पृ १२४)।

अक्खोड (**आ+स्फोटय्**)—थोड़ा या एक बार झटकना (द ४ सू १६)।

अक्खोड (**कृष्**)—तलवार को म्यान में से खींचना (प्रा ४।१८८)।

अग्गुम (**पृ**)—पूरित करना।

अग्घ (**अर्ह्**)—प्राप्त होना (उ ६।४४)।

अग्घ (**राज्**)—शोभना, चमकना (प्रा ४।१००)।

अग्घव (**पूर्**)—पूरा करना (प्रा ४।१६६)।

अग्घाड (**पूर्**)—पूरा करना (प्रा ४।१६६)।

अग्घोड (**पृ**)—पूर्ण करना।

अच्चुक्क (**वि+ज्ञापय्**)—विज्ञापन करना।

अच्छ (**कृष्**)—खींचना।।

अच्छ (**आस्**)—बैठना, ठहरना (उशाटी प १४७)।

अच्छिज्ज—आच्छादन करना (से १४।७)।

अच्छुर—बिछाना—'संथारयं अच्छुरंति' (ओटी प ८३)।

अट्ट (**क्वथ्**)—उबालना, पकाना (प्रा ४।११६)।

अट्ट (**शुष्**)—सूखना—'अट्टंति णहअले च्चिअ मारुअभिण्णलहुआ सलिल-कल्लोला' (से ५।६१)।

अड—वंदना करना (आवचू १ पृ २७१)।

अडखम्म—देखभाल करना—'अडखम्मिज्जंति सवरिआहि वणे' (दे १।४१ वृ)।

अडुक्ख (**क्षिप्**)—फेंकना (प्रा ४।१४३)।

अडुव—गिरवी रखना।

अड्ड—रोकना (आवहाटी २ पृ ८७)।

अणच्छ (**कृष्**)—खेती करना (प्रा ४।१८७)।

अणुचिट्ठ (**अनु+स्था**)—१ स्थिर रहना, टिकना—'सामण्णमणुचिट्ठइ' (द ५।१३०)। २ अनुष्ठान करना। ३ करना।

अणुवज्ज—सेवा-शुश्रूषा करना (दे १।४१ वृ)।

अणुवज्ज (**गम्**)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट—२

देशी धातु-चयनिका

[इस परिशिष्ट में देशी धातुओं तथा आदेशप्राप्त धातुओं का चयन किया गया है। आगम, उनके व्याख्याग्रंथों तथा प्राकृत व्याकरण की धातुएं सप्रमाण एवं क्वचित् ससन्दर्भ संगृहीत हैं। त्रिविक्रम व्याकरण, पाइअसद्द-महण्णवो तथा कुछ अन्य प्राकृतग्रंथों से गृहीत धातुएं बिना प्रमाण के संकलित हैं। आदेशप्राप्त धातुओं के संस्कृत धातु रूप भी कोष्ठक में दे दिए गए हैं।]

अ

अइच्छ (गम्)—गमन करना (प्रा ४।१६२)।

अइच्छ (अति+क्रम्)—उल्लंघन करना (ओनि ५१८)।

अइमल्ह—धीमे चलना।

अई (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

अंगुम (पूरय्)—पूरा करना (प्रा ४।१६९)।

अंगोहल—स्नान करना (व्यभा १० टी प ५२)।

अंच (कृष्)—१ खींचना (दश्रु ८।१०)। २ खेती करना। ३ रेखा करना (प्रा ४।१८७)।

अंच—झुकाना—'अंचेति त्ति वा णामेति त्ति वा एगट्ठं' (सूचू १ पृ २४०)।

अंछ (कृष्)—१ खींचना—'अंछंति वासुदेवं अगडतडम्मि ठियं संतं' (विभा ७९४)। २ लम्बा होना (विभा ७९५)।

अंछाव (कृष्)—खींचना—'अब्भंतरियं जवणियं अंछावेइ' (भ ११।१३८)।

अंछि—निकालना, आकर्षण करना (आवहाटी १ पृ १५१)।

अंबाड (तिरस्+कृ)—तिरस्कार करना (उसुटी प २)।

अंबाड (खरण्ट्)—लेप करना—'चमढेति खरण्टेति अंबाडेति त्ति वुत्तं भवति' (निचू ४)।

अकु—खाना—'अकु भक्षणे' (आचू पृ ३४४)।

अक्कुस (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अल्लिय (**उप+सृप्**)—समीप में जाना (आवचू १ पृ २१२)।
अल्लिय (**आ+ली**)—आलिङ्गन करना (प्रा ४।५४)।
अल्लिव (**अर्पय्**)—अर्पण करना (प्रा ४।३६)।
अव—कहना।
अवअच्छ (**ह्लाद्**)—आनन्द पाना, खुश होना (प्रा ४।१२२)।
अवअच्छ (**ह्लादय्**)—खुश करना (प्रा ४।१२२)।
अवआस (**दृश्**)—देखना (प्रा ४।१८१)।
अवंगुण—खोलना—'दुवारवयणाइं अवंगुणंति' (भ १५।१४२)।
अवक्ख (**दृश्**)—देखना (प्रा ४।१८१)।
अवखेर—खिन्न करना।
अवज्जस (**गम्**)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।
अवज्झ (**दृश्**)—देखना।
अवडक्क—आत्महत्या करना।
अवडाह (**उत्+क्रुश्**)—ऊंचे स्वर से रुदन करना (दे १।४७वृ)।
अवपंगुण—खोलना—'णो पीहे ण यावपंगुणे' (सू १।२।३५)।
अवपंगुर—खोलना (द ५।१।१८)।
अवपुस—संयुक्त करना।
अवयक्ख (**अव+ईक्ष्**)—१ देखना। २ पीछे मुड़कर देखना (ओभा १८८)।
अवयच्छ (**दृश्**)—देखना (प्रा ४।१८१)।
अवयक्ख (**अप+ईक्ष्**)—अपेक्षा करना।
अवयज्झ (**दृश्**)—देखना (प्रा ४।१८१)।
अवयास (**श्लिष्**)—गले लगाना (प्रा ४।१६०)।
अवरुंड—आलिंगन करना (दे १।११ वृ)।
अववाह (**अव+गाह्**)—अवगाहन करना।
अवसिज्ज (**अव+सद्**)—हारना, पराजित होना (विभा २४८४)।
अवसेह (**गम्**)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।
अवसेह (**नश्**)—पलायन करना, भागना (प्रा ४।१७८)।
अवह (**रच्**)—निर्माण करना (प्रा ४।६४)।
अवहर (**नश्**)—पलायन करना, भागना (प्रा ४।१७८)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org